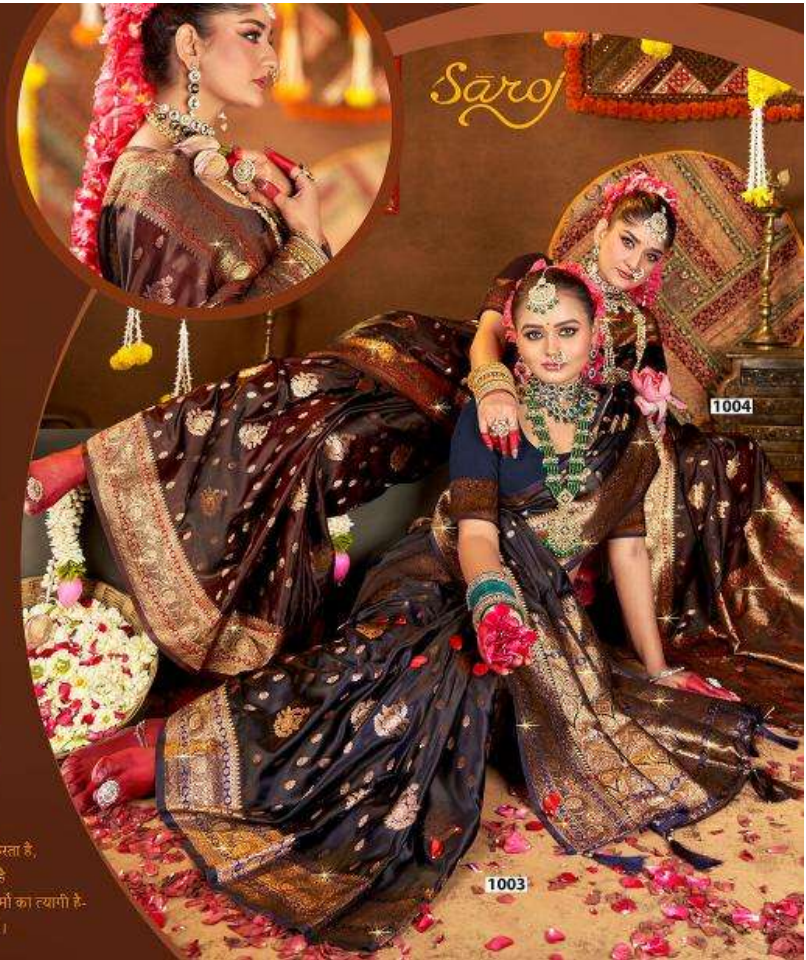




1001



जो न कभी संवित होता है, न द्वेष करता है,
 न शोक करता है, न कामना करता है
 तथा जो शून्य और वक्षुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है-
 यह भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है ।



1001



1002



1003



1004